गुरु नानक – सबद २८

अमुल गुण अमुल वापार ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ५

अमुल गुण अमुल वापार ॥
अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥
अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥
अमुल भाइ अमुला समाहि ॥
अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥
अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥
अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥
अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥
अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥
आखि आखि रहे लिव लाइ ॥
आखहि वेद पाठ पुराण ॥
आखहि पड़े करहि वखिआण ॥
आखहि बरमे आखहि इंद ॥
आखहि गोपी तै गोविंद ॥
आखहि ईसर आखहि सिध ॥
आखहि केते कीते बुध ॥
आखहि दानव आखहि देव ॥
आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥
केते आखहि आखणि पाहि ॥
केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥
एते कीते होरि करेहि ॥
ता आखि न सकहि केई केइ ॥
जेवडु भावै तेवडु होइ ॥
नानक जाणै साचा सोइ ॥
जे को आखै बोलुविगाड़ु ॥

ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥२६॥

सार: अमूल्यता का तात्पर्य किसी ऐसी चीज़ से है जो बहुत मूल्यवान हो और जिसका मापना मुश्किल हो। इसकी तुलना आध्यात्मिक स्थिति से की जा सकती है जो दुनयावी संपत्तियों के प्रति लगाव से अलग है और ज्ञान, आंतरिक शांति और संतुलन जैसे विभिन्न गुणों से मिलकर बनती है। संपत्ति की कोई भी क़ीमत इन गुणों को विकसित करने के मूल्य की तुलना नहीं कर सकती है, और कोई भी स्पष्टीकरण एक पूर्ण जीवन जीने के लिए उनके लाभ का पूरी तरह से वर्णन नहीं कर सकता है।

अमुल गुण अमुल वापार ॥
आध्यात्मिक गुण अनमोल हैं, और आध्यात्मिक लेन-देन के तरीक़े अनमोल हैं।

अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥
आध्यात्मिकता के व्यापारी अनमोल हैं, और मानवता के ख़ज़ाने अनमोल हैं।

अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥
अनमोल हैं वह जो आध्यात्मिकता की ओर कदम बढ़ाते हैं, और अनमोल हैं वह जो ज्ञान प्राप्त करते हैं।

अमुल भाइ अमुला समाहि ॥
वह अनमोल हैं जो भक्ति से ओत-प्रोत हैं और वह अनमोल हैं जो प्रेम में डूबे हुए हैं।

अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥
जो नेक हैं वह अनमोल हैं, उनकी मंडली अनमोल है।

अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥
अनमोल हैं जो संतुलित हैं, अनमोल हैं वह जो सच्चे, खरे हैं।

अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥

प्रकृति में मौजूद उपहार अनमोल हैं, अनमोल है उनका अस्तित्व।

अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥

कर्म अनमोल है, मार्गदर्शन करने वाले प्रकृति के नियम अनमोल हैं।

अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥

प्रकृति के अनमोल नियमों की अमूल्यता अभिव्यक्ति से परे है।

आखि आखि रहे लिव लाइ ॥

ध्यान और स्मरण करते हुए चिंतन की स्थिति को बनाए रखें।

आखहि वेद पाठ पुराण ॥

वेद और पुराण अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

आखहि पड़े करहि वखिआण ॥

विद्वान उसको स्पष्टता से समझाते हैं।

आखहि बरमे आखहि इंद ॥

देवात्मा और दिव्य सत्ता अपने मूल सार को प्रकट करते हैं।

आखहि गोपी तै गोविंद ॥

दिव्य प्राणी और भक्त अपने दृष्टि कोण का उल्लेख करते हैं।

आखहि ईसर आखहि सिध ॥

सर्वोच्च आत्म चिंतन करते हैं, आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध लोग अपना संदेश देते हैं।

आखहि केते कीते बुध ॥

इन संवादों ने कई लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया है।

आखहि दानव आखहि देव ॥
अज्ञानी अपनी राय देते हैं, प्रबुद्ध अपने सुझाव देते हैं।

आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥
आध्यात्मिक योद्धा, दिव्य देवता, ऋषि, धार्मिक और विनम्र सेवक सबके अपने-अपने दृष्टिकोण हैं।

केते आखहि आखणि पाहि ॥
ऐसे बहुत हैं जो प्रकृति के नियमों को जानने का दावा करते हैं और इसके बारे में उपदेश देते हैं।

केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥
कई लोगों ने प्रकृति के संपूर्ण नियमों को समझने का प्रयास किया है लेकिन बहुत कम प्रगति हुई है और और अंततः असफल हो गए या ख़त्म हो गए।

एते कीते होरि करेहि ॥
भले ही उनके जैसे कई लोग पैदा हो जाएं और वह और भी कई कोशिशें करें।

ता आखि न सकहि केई केइ ॥
वह प्रकृति के सम्पूर्ण नियमों को व्यक्त नहीं कर पायेंगे।

जेवडु भावै तेवडु होइ ॥
सब कुछ प्रकृति की इच्छा के अनुरूप होता है।

नानक जाणै साचा सोइ ॥
नानक कहते हैं कि सत्य वही जानते हैं जो सच्चे हैं ।

जे को आखै बोलु विगाड़ु ॥
अगर कोई प्रकृति के नियमों का पूर्णतः वर्णन करने का प्रयास करता है, तो वह स्पष्ट रूप से अपनी व्याख्या को बिगाड़ देगा।

ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥२६॥

ऐसा व्यक्ति अज्ञानियों में भी अज्ञानी ही कहलाएगा। (२६)

तत्त्व: गुरु नानक के अनुसार, सदगुणों के माध्यम से मिलने वाले अनमोल ज्ञान की अमूल्यता केवल वह ही जानते हैं जो अपना जीवन सत्य पर आधारित और प्रकृति के नियमों के अनुसार जीते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com